भाकृअनुप
ICAR

सत्यमेव जयते
Department of Science
& Technology
Government of India

भा.च.चा.अ.सं.
IGFRI

बुन्देलखंड में पशुओं में होने वाले विभिन्न रोग एवं उनकी रोकथाम

संकलनकर्ता :
साधना पाण्डेय
एस.बी. मैती
के.के. सिंह
एस.आर. कांटवा
खेमचन्द
सचेन्द्र त्रिपाठी

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
झाँसी-284003 (उ.प्र.)

बुन्देलखंड में पशुओं में होने वाले विभिन्न रोग एवं उनकी रोकथाम

बुन्देलखंड में किसान की आय का प्रमुख स्त्रोत कृषि एवं पशुपालन है जिसमें कृषि से लगभग 67 प्रतिशत एवं पशुपालन से लगभग 26 प्रतिशत आय प्राप्त होती है। किसान के पास पशु की संख्या तो अधिक है किन्तु आय कम है इसका प्रमुख कारण है पशुओं का खराब स्वास्थ्य एवं संतुलित आहार में कमी। साधारणतः जिस पर पशुपालक विशेष ध्यान नहीं देते हैं। वैज्ञानिक उपायों से पशुपालन में और भी उन्नति संभव है। अच्छी खेती व अच्छी आय के लिए बैल, भैंस, गाय आदि का स्वास्थ्य प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। पशुओं को खतरनाक बीमारियों से बचाने के लिए रोगों की पहचान तथा रोकथाम के उपाय जानना बहुत जरूरी है। विश्व में भारत का दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान तो है लेकिन विकसित देशों की तुलना में दुग्ध उत्पादकता आज भी कम है। दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिये पशुओं के स्वास्थ्य एवं संतुलित आहार पर विशेष ध्यान देना होगा तभी श्वेत क्रांति का लक्ष्य पूरा होगा।

बीमार पशुओं के प्रमुख लक्षण :

- अचानक आहार कम होना या भूख न लगना।
- शरीर का तापमान अचानक बढ़ जाना या फिर कम हो जाना।
- पशु के नथुने सूख जाना या नाक से पानी निकलना।
- श्वसन की गति अधिक एवं साँस फूलना तथा साँस गरम हो जाना।
- मल सामान्य न होना या मूत्र का रंग बदल जाना।
- आँख लाल होना या आँखों से पानी टपकना।
- पशु सुस्त दिखाई देना।
- पशु के कान नीचे की तरफ लटकना।
- पशुओं के शरीर पर चोट का निशान।
- पशु शरीर पर रोंगटे खड़ा होना आदि।

निम्न वर्णित सभी स्थिति में पशुओं का इलाज व देख–रेख पशु चिकित्सक को दिखाकर व उनके अनुसार ही करना चाहिए।

थनैला रोग :

गौवंशी पशुओं में थनैला रोग के कारण बहुत अधिक आर्थिक क्षति होती है। आमतौर पर इस रोग की उत्पत्ति अयन पर जीवाणु के आक्रमण के कारण होती है। थनैला रोग जीवाणु द्वारा फैलने वाली बीमारी है। जो अधिकतर स्टौफाइली, स्ट्रैप्टोकोकाई आदि जीवाणु से फैलती है।

लक्षण :

- थनैला रोग अधिकतर अल्पकालिक होता है। यद्यपि कभी–कभी यह तीव्र रूप में भी देखा गया है।
- थनैला रोग से पशु शरीर का तापमान अचानक बढ़ जाता है।
- अयन गर्म तथा दर्द युक्त लाल रंग लिए सूजा सा दिखाई पड़ता है बाद में ठंडा व कड़ा हो जाता है।
- एकाएक दूध का बहाव बंद हो जाता है।
- थनों से निकला हुआ दूध पहले पीला बाद में गहरे लाल रंग का हो जाता है तथा दूध में दही जैसा छेछड़ा दिखाई देता है।
- कभी–कभी इस रोग के कारण थन हमेशा के लिए भी खराब हो जाते है।

- यह रोग पशु के ब्याने के ज्यादातर कुछ ही दिनों के अन्दर फैल जाता है।
- इस रोग में पशु के सामान्य स्वास्थ्य पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता है।

रोकथाम के उपाय :

- इस रोग का कोई टीका नहीं है अतः पशु तथा अयन की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए
- हर सप्ताह मैस्ट्रिप से दूध की जाँच करना चाहिए।
- रोग ग्रसित पशु का दूध बछड़ों को नहीं पिलाना चाहिए एवं घरेलू उपयोग में नही लाना चाहिये।
- दूध निकालने से पहले थनों की अच्छी तरह से जाँच कर लेना चाहिए।
- थनों पर चोट या घाव लगने पर तुरंत इलाज कराना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुठ्ठी बाँधकर निकाले।
- गर्म पानी में नीम की पत्तियां डालकर अयन की सिकाई करने से आराम मिलता है।
- पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले रूप में पशुओं को रखना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कहीं दूर गाढ़ देना चाहिए।

खुरपका -मुँहपका रोग :

खुरपका–मुँहपका पशुओं को होने वाला बहुत ही संक्रामक रोग है जो कि गाय, भैस, भेड़, बकरी आदि जानवरों में विषाणु के द्वारा फैलता है। यह एक पशु से दूसरे पशु में अति तीव्रता से फैलता है।

लक्षण :

- पशु को तेज बुखार आता है तापक्रम 104–105 डिग्री फारेन्हाइट तक पहुँच जाता है।
- मुँह के अंदर गालों, जीभ व ओठों पर लाल रंग के फफोले पड़ जाते हैं।
- खुरों के बीचो–बीच फफोले पड़ जाते हैं।
- कभी–कभी खुरों के मध्य मक्खियों के बैठने से कीड़े पड़ जाते हैं।
- पशु लँगड़ा कर चलने लगता है।
- पैर टेकने में तकलीफ होती है।
- मुँह से लार टपकने लगती है तथा ओंठों से चपचपाहट की आवाज आती है।
- पशु चारा खाना बंद कर देता है।
- पशु पहले से कमजोर दिखाई देने लगता है।
- पशु ज्यादातर बैठा रहता है।

रोकथाम :

- चिकित्सक द्वारा खुरपका–मुँहपका का टीका लगवाना बहुत जरूरी है।
- मुँहपका–खुरपका रोग से ग्रस्त पशुओं को अलग स्थान या बाड़े में बाँधें ताकि संक्रमण स्वस्थ पशुओं में न हो।
- इस रोग से ग्रसित गाय/भैंस का दूध बछड़े को न पीने दें क्योंकि उनमें इस रोग से हृदय घात से मृत्यु हो सकती है।
- बीमार पशु का चारा खाने का स्थान व पानी पीने का बर्तन अलग स्थान पर रखना चाहिए।
- पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले रूप में पशुओं को रखना चाहिए।

- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कहीं दूर गाढ़ देना चाहिए।

संक्रामक गर्भपात :

प्राचीन काल से संक्रामक गर्भपात गौवंशी पशुओं का घातक रोग समझा जाता है। यह रोग पशुओं की घनी आबादी वाले देशों में पाया जाता है और यह रोग संसार के उन अधिकांश भागों में पाया जाता है जहाँ पर गौवंशी पशु अधिक संख्या में है। गौवंशी पशु में गर्भपात का कारण प्रोटोजोआ परजीवी ट्राइकोमोनास फीटस भी होता है। इस रोग को ''बुसेल्लोसिस'' भी कहा जाता है।

लक्षण :

- इसका प्रमुख लक्षण गर्भ गिरना है यह गर्भधारण के 5–6 महीने में हो जाता है।
- गर्भपात के बाद गर्भनाल पशु के शरीर में ही रह जाता है।
- हल्का सा बुखार आना।
- योनी से बादामी रंग का स्त्राव निकलता है।
- अयन फूलकर लाल दिखाई पड़ने लगते हैं।
- पशुओं में कमजोरी आ जाती है।

रोकथाम :

- 4–8 माह की आयु में पशु चिकित्सक के द्वारा इसका टीका दिया जाता है जो रोग से बचाता है।
- पशु के खान–पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशुशाला की साफ–सफाई पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु को संतुलित आहार देना चाहिए।
- समय–समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना चाहिए।
- पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले रूप में पशुओं को रखना चाहिए।

लंगड़ी :

यह एक छुआछूत की बीमारी है जिसमें पशुओं के मसीले भाग में गैस भरी सूजन आ जाती है। यह गाय, भैस, भेड़, बकरी आदि जानवरो में देखी जाती है रोग पशु के कंधे या पिछले पुट्ठे पर होकर पशु को लंगड़ा बना देता है।

लक्षण :

- पशु अन्य पशु से अलग खड़ा होता है।
- खाना पीना व जुगाली करना बंद कर देता है।
- तेज बुखार 107–108 डिग्री फारेन्हाइट के साथ जाँघों में या गर्दन पर दर्द शुरू होता है सूजन जल्दी–जल्दी बढ़ने लगती है।
- शरीर का तापक्रम एकदम बढ़ना तथा अचानक सामान्य से भी कम हो जाता है और पशुओं की मृत्यु हो जाती है।
- पशु लंगड़ा के चलता है तथा सूजन वाला भाग दबाने पर चुर–चुर की आवाज आती है।
- कभी–कभी पशु बिलकुल चल फिर नहीं पाता है।

रोकथाम :

- स्वस्थ पशुओं को पशु चिकित्सक की सलाह द्वारा 6 माह आयु से पहले व प्रति वर्ष इसका टीका लगवाना चाहिए।
- पशु के खान–पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशुशाला की नियमित साफ–सफाई पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु में लगने वाले किल्ली, जूँ को शरीर में

दवा लगाकर खत्म कर देना चाहिए ये बहुत सी बीमारियों को पैदा करने मे मदद करते हैं।

- पशु को पिलाने वाला पानी स्वच्छ होना चाहिए।
- पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले रूप में पशुओं को रखना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कही दूर गाढ़ देना चाहिए।

क्षयरोग :

यह एक संसर्गी रोग है जो माइक्रोबैक्टीरियम पैराट्यूबरकुलोसिस के कारण उत्पन्न होता है। यह रोग मनुष्य के साथ–साथ पशु पक्षी में अधिकतर फैलता है मुख्यतः यह पशुओं में ज्यादा देखा जाता है।

लक्षण :

- यह एक दीर्घ कालीन रोग है इस रोग के लक्षण पशु में बहुत दिनों में प्रकट होते हैं।
- फेफड़ों के क्षय में पशु खाँसता है तथा मुँह से सूखा कफ निकलता है।
- कभी बुखार तेज तथा कभी सामान्य हो जाता है।
- कुछ समय बाद पशु की नाक से श्लेष्मा स्त्राव बहता है।
- साँस लेने में तकलीफ, अफरा होना, वजन घटना।
- पशु की खाल उसकी हड्डियों से चिपक जाने से शरीर में खून की कमी हो जाती है।
- लसीका ग्रन्थि बढ़ जाती है और पशु की मृत्यु हो जाती है।

रोकथाम :

- पशु चिकित्सक की सलाह द्वारा छोटे बछड़ों को इसका टीका देना चाहिए।
- बीमारी से बचाव के लिए स्वस्थ पशु को खुले रोशनी व हवादार बाड़ों में बाँधना चाहिये।
- रोग ग्रसित पशु के सम्पर्क में स्वस्थ पशु को नहीं आने देना चाहिये ।
- पशुशाला की नियमित साफ–सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- क्षय ग्रसित पशु का दुग्ध बछड़ों को नहीं पिलाना चाहिये व घरेलू उपयोग में नही लाना चाहिये इससे उनमें भी रोग फैल जाता है।
- रोग के कुछ लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- प्रोटीन तथा विटामिन युक्त राशन देते रहना चाहिए।
- पशु को पिलाने वाला पानी स्वच्छ होना चाहिए।
- बीमार पशु का चारा खाने का स्थान व पानी पीने का बर्तन अलग रखना चाहिए।
- पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले में पशुओं को रखना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कहीं दूर गाढ़ देना चाहिए।

एन्थ्रेक्स :

एन्थ्रेक्स तीव्र संक्रामक रोग है जो बेसिलस एन्थ्रेसिस नामक विशिष्ट विषाणु के कारण होता है। यह प्लीहा का बुखार या जहरी बुखार भी कहलाता है। जिसमें पशुओं की अधिकतर मृत्यु हो जाती है।

लक्षण :

- तेज श्वांस व पशु काँपते हुए गिर जाते हैं।
- मुँह, नाक तथा मलाशय से रक्त मिला हुआ झॉगदार स्त्राव निकलता है। कुछ ही क्षणों में पशु की मृत्यु हो जाती है।
- कभी–कभी पशु शरीर का तापमान बढ़कर 106 डिग्री फारेन्हाइट तक पहुँच जाता है।
- शरीर के कुछ भागों में पसीना आना तथा शरीर के प्राकृतिक छिद्रों से काला स्त्राव निकलता है और उसका न जमना ये रोग के प्रमुख लक्षण है।
- मृत्यु के बाद पशु का शरीर शीघ्र फूल जाता है।

रोकथाम :

- पशु चिकित्सक की सलाह द्वारा प्रतिवर्ष वर्षा से पूर्व इसका टीका लगवाना चाहिए।
- यह रोग प्रकट होने पर लाइलाज है अतः रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कहीं दूर गाढ़ देना चाहिए।
- पशुशाला की नियमित साफ–सफाई पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु को पिलाने वाला पानी स्वच्छ होना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद खाल नहीं उतारना चाहिए।
- रोगी या संदिग्ध रोगी गाय, बकरी आदि का दूध दूसरे पशुओं के दूध के साथ नहीं मिलाना चाहिए।
- जितना जल्दी हो सके किसी स्वीकृत विसंक्रामक पदार्थ से उस स्थान को संक्रामणरहित भी करना चाहिए जहाँ पर संक्रमित पशु का शव व रक्त पड़ा हो।
- रोग ग्रसित पशु को स्वस्थ पशु से अलग कर देना चाहिए।
- पशुगृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले में पशुओं को रखना चाहिए।

गलाघोंटू :

यह रोग पास्चुरेला–बैक्टीरिया से गाय एवं भैसों में फैलता है तथा एक भंयकर जानलेवा बीमारी है। यह तीव्र गति से छूत से फैलने वाला रोग है। जीवाणु स्वस्थ पशु के शरीर में भोजन अथवा सांस (हवा) द्वारा प्रवेश कर बीमारी फैलाते हैं।

लक्षण :

- एकाएक तापक्रम बढ़कर 104–108 डिग्री फारेन्हाइट तक पहुँच जाता है।
- खाने में अरूचि व कानों का नीचे लटकना।
- तेज बुखार के साथ–साथ गलकम्बल, गला और जबड़े के बीच कड़ी गर्म सूजन आ जाती है।
- पहले कब्ज फिर दस्त, शरीर में ऐंठन, दाँत पीसना, दस्त में श्लेष्मा आना आदि।
- जीभ सूजकर मुँह से बाहर आ जाती है।
- मुँह से लार टपकना, कष्टप्रद साँस तथा आंखे सूजकर लाल हो जाती है।
- पशु को जब साँस लेने में कठिनाई होती है तब गले से घुर्र–घुर्र की आवाज आती है।
- अंत में दम घुटकर 24–36 घंटे में पशु की मृत्यु हो जाती है।

रोकथाम

- पशु चिकित्सक की सलाह द्वारा प्रतिवर्ष वर्षा आरम्भ होने से पूर्व पशुओं में सामूहिक रूप से गलाघोंटू का टीका लगवाना चाहिए।

- ग्रसित पशु को स्वस्थ पशु से अलग कर देना चाहिए।
- रोग के कुछ लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- पशुशाला की नियमित साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु के खान–पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु गृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले में पशुओं को रखना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कहीं दूर गाढ़ देना चाहिए।

बच्चेदानी का बाहर निकलना :

इस रोग मे योनि अथवा बच्चादानी, योनिद्वार से बाहर निकल आती है। यह समस्या गर्भावस्था के आखिरी महीनों से लेकर बच्चा देने के 1–2 महीने तक कभी भी हो सकती है।

बच्चेदानी बाहर निकलने के निम्न कारण हो सकते हैं –

ब्याने के पूर्व कारण :

- पशु शरीर में कैल्शियम की कमी इसका प्रमुख कारण होता है।
- पशु को कब्ज होने के कारण।
- प्रोजेस्टोन नामक हारमोन की कमी के कारण।
- पिछले ब्यांत में कठिन प्रसव व बच्चे को गलत तरीके से खींचना हो सकता है।

प्रसव के बाद के कारण :

- प्रसव के दौरान होने वाला प्रोलेप्स सबसे अधिक खरतनाक होता है।
- प्रोलेप्स होने पर भैस बैठी रहती है तथा गर्भाशय बाहर निकल आता है।
- यदि बच्चादानी बाहर निकलने की समस्या प्रसव के कुछ दिनों बाद आती है तो उसका मुख्य कारण बच्चेदानी में कोई घाव या संक्रमण होता है।
- घाव या संक्रमण प्रसूति के समय गलत तरीके से बच्चा खींचने से अथवा जेर रूकने व गंदे हाथों से जेर निकालने से हो सकता है।
- योनि में जलन होने के कारण भैंस अक्सर पीछे की ओर जोर लगाती है जिससे बच्चादानी बाहर आ जाती है।

प्रसव से पहले प्रोलेप्स होने की स्थिति में ध्यान देने योग्य बातें :

- भैंस को ऐसे फर्श पर बाँधे जो आगे से नीचा व पीछे से 3–4 इंच ऊँचा हो।
- बाड़ा चारों ओर से सुरक्षित व बंद होना चाहिए ताकि कुत्ते व कौवे ऐसे स्थान से दूर रहें। कुत्ते और कौवे शरीर के बाहर निकले हुए भाग को काटकर खाने लगते हैं जिससे पशु को काफी नुकसान पहुँच सकता है।
- भैंस बाँधने का स्थान साफ–सुधरा होना चाहिए।
- भैंसों को सूखा भूसा या चारा न खिलाएं, हरा चारा खिलाएं तथा दाने में चोकर की मात्रा बढ़ा दें।
- भैंस के दाने में प्रतिदिन खनिज मिश्रण अवश्य मिलायें।
- योनि को धीरे–धीरे अंदर धकेलने का प्रयास करना चाहिए योनि अंदर हो जाने के बाद उस पर नर्म रस्सी की गोन्डी/एड़ी बाँध

देनी चाहिए। यह ध्यान रहे एड़ी अधिक कसी न जाये। पेशाब के लिए 3–4 उंगलियों का रास्ता रहे।

प्रसव के दौरान प्रोलेप्स होने की स्थिति में ध्यान देने योग्य बातें :

- प्रसव के बाद प्रोलेप्स होने पर भैंस को अन्य पशुओं से अलग बाँध कर रखे।
- गर्भाशय को लाल दवायुक्त ठण्डे पानी से धो दें ताकि इस पर भूसा व गोबर न चिपका रहे।
- गर्भाशय को एक गीले तौलिया से ढक दे ताकि गर्भाशय सूखने न पाये तथा उस पर मक्खियाँ न बैठे।
- शरीर के निचले भाग की सफाई का विशेष ध्यान दे तथा उसे पैरों द्वारा कभी अंदर न धकेले।
- गर्भाशय में बच्चा फँसने पर उसे जबरदस्ती नहीं निकलवाना चाहिए।
- जेर रूकने पर उसे निकालने के लिए अधिक जोर नहीं लगाना चाहिए।
- भैंस को कैल्शियम युक्त खनिज मिश्रण नियमित रूप से खिलाना चाहिए।
- गंभीर स्थिति होने पर पशु चिकित्सक को बुला लेना चाहिए।

पशु प्लेग (दस्त) :

यह रोग गाय, भैंस, बैल, बकरी आदि में फैलने वाली एक भंयकर जानलेवा बीमारी है जो विषाणु द्वारा फैलती है इसे पोंकनी के नाम से भी जाना जाता है।

लक्षण :

- एकाएक तापक्रम बढ़कर 104–108 डिग्री फारेन्हाइट तक पहुँच जाता है।
- आँख लाल होना, आँखों से पानी टपकना।
- पहले सूखा कड़ा गोबर बाद मे पतला दस्त पिचकारी की तरह जो बाद में बदबूदार झाग तथा रक्त युक्त हो जाता है।
- खाने में अरूचि व कानों का नीचे लटकना।
- पेट में ऐंठन व पशुओं में कमजोरी आ जाती है जिससे पशु को खड़े होने में तकलीफ होती है।

रोकथाम :

- रोग के कुछ लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- पशु चिकित्सक की सलाह द्वारा प्रतिवर्ष इसका टीका लगवाना चाहिये।
- रोग से ग्रसित पशु के पतले बदबूदार दस्त को तुरंत साफ करना चाहिए।
- पशुशाला की नियमित साफ–सफाई करना चाहिए।
- पशु के खान–पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- पशु को साफ एवं स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए।
- ग्रसित पशु को स्वस्थ्य पशु से अलग कर देना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु के बाद शव को कहीं दूर गाढ़ देना चाहिए।
- पशु गृह में अधिक झुण्ड में पशुओं को न रखकर, कम संख्या में एवं खुले में पशुओं को रखना चाहिए।

मार्गदर्शन : डॉ. पी.के. घोष, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी–284003 उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0510–2730666, फैक्स : 0510–2730833, www.igfri.res.in
उत्प्रेरित एवं समर्थित : साइंस फॉर इक्विटी एम्पावरमेन्ट एन्ड डेवलपमेन्ट विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली
Darpan Printers & Lamination